तेवरीपक्ष —16

जनजागरण की विचार प्रधान त्रैमासिकी

आप कहते हैं उजाले आयेंगे
मानिए दिन और काले आयेंगे ।
भूख आँतें ऐंठती है रातदिन
राम जाने कब निबाले आयेंगे ?
नयन में सपने बहुत आकाश के
हौसले कब पंख वाले आयेंगे ।
आचरण अब झूठ के हर मंच से
ओढ़कर नैतिक दुशाले आयेंगे ।
धरम की तलवार ले आखेट को
कब तलक मस्जिद, शिवाले आयेंगे।

—सुरेश त्रस्त

इस अंक में—

सुरेश त्रस्त, अशोक द्विवेदी, यादराम शर्मा, अशोक अंजुम, डॉ० गोपाल बाबू शर्मा, गिरिमोहन गुरू, अजय साहिल, जलाल अहमदखाँ तनवीर, तरल अलापुरी, दर्शन बेजार, रमेश राज, ज्ञानेन्द्र साज, डॉ० राकेशगुप्त,

वर्ष—१५ अंक—संयुक्तांक जनवरी से दिसम्बर ९७

21-

तेवरीपक्ष

जनजागरण की विचार प्रधान त्रैमासिकी

संस्थापक :
लोककवि रामचरनगुप्त

परामर्श :
डॉ० गोपाल बाबू शर्मा

सम्पादक
रमेशराज

सहयोग राशि
एक प्रति – छः रुपए
वार्षिक – बीस रुपए

पत्रिका परिवार–

श्री दर्शन बेजार
श्री रोशनलाल सुरीरवाला
अजय अंचल
सुरेश त्रस्त
अनिल अनल
श्याम बेबस
ब्रह्मदेव शर्मा
कुमार अशोक
गजेन्द्र गीत
विजयपाल सिंह

संपादन संचालन–अवैतनिक

संपर्क :-- सार्थक सृजन प्रकाशन, १५/१०६, ईसानगर, निकट थाना सासनी गेट, अलीगढ़–२०२००१

इस अंक की प्रिंटिंग सम्बन्धी अशुद्धियों के लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं ।

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय

तेवरी का सौन्दर्य बोध -2

कोई भी कविता या रचना सुन्दर तभी हो सकती है, जबकि उसमें अन्तर्निहित वैचारिक ऊर्जा पाठकों को उस रागात्मक चेतना के दर्शन कराये जो लोक या मानव के सुख-दुख में हिस्सेदारी करने के साथ-साथ लोक या मानव पर आये संकटों का सामना करने में सक्षम हो। कविता की मानव मूल्यों से युक्त यह लोकोन्मुखी रागात्मक चेतना यदि सत्य और शिव तत्व से विहीन केवल आनंदोपलब्धि या व्यक्तिगत संतुष्टि का जब तक माध्यम बनी रहेगी, तब तक उसमें सौन्दर्य के वास्तविक स्वरुप का अभाव झलकता रहेगा। अतः कविता का प्रयोजन या उसका उद्देश्य वाह्य सौन्दर्य की झलक मात्र न होकर, उस सात्विक और सूक्ष्म सौन्दर्य की प्रस्तुति होनी चाहिए, जो पाठकों के मन में सीधे-सीधे प्रवेश कर उन्हें ऐसी रमणीय और रसात्मक दशा की ओर ले जाये, जिसमें पाठक न तो कविता के कोरे रूप-जाल का शिकार हो और न वह कोरे चमत्कार या रहस्य की चकाचौंध या निरर्थक बिम्बों के घटाटोप में फँसे। इसके लिए आवश्यक यह है कि कविता की छन्दयोजना, अलंकारयोजना, बिम्ब- योजना, ध्वनियोजना, अर्थात् समस्त प्रकार की शिल्पयोजना अन्ततः एक ही योजना के दर्शन कराये, वह योजना है- सत्य और शिव तत्वों के समन्वय की योजना।

कविता में यदि शिव और सत्य तत्व का समन्वय है तो वह सुन्दर न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। कविता के सत्य और शिव तत्व मानव के वह वैचारिक मूल्य हैं,जो मनुष्य के रागात्मक सम्बन्धों को एक तरफ जहाँ प्रगाढ़ता प्रदान करते हैं, वहीं लोक या मानव पर आये संकट के समय उसके रागात्मक मूल्यों की सुरक्षा करने के उपाय भी सुझाते हैं, अतः कविता में वास्तविक और सात्विक सौन्दर्य के दर्शन पाठको को उसी कविता में हो सकते हैं जिसकी वैचारिक ऊर्जा उनकी जीवन समस्याओं के हल प्रदान करती है,

उन्हें जटिल से जटिल परिस्थितियों का सामना करने के लिए साहस से सिक्त करती है । शोषक और व्यक्तिवादी शक्तियों के विरोध में खड़ा करने का प्रयास करती है ।

कविता एक तरफ जहाँ लोक के आत्म की सुरक्षा करती है, वहीं वह लोक को तोष भी प्रदान करती है । कविता यह लोक सापेक्ष सुरक्षा और तोष का वैचारिक–दर्शन ही सौन्दर्य का वास्तविक और सात्विक दर्शन है, जिसमें सत्य और शिव के समन्वय की धारा एक झरने की तरह फूटती है और कल–कल नाद करती हुई रागात्मक सम्बन्धों की एक नदी बन जाती है ।

तेवरी की वैचारिक ऊर्जा की रागात्मक धारा उस समाज या लोक की रागात्मकता है, जिसके हाथ भले ही कंकड़ और पत्थर तोड़ते समय लहूलुहान हो जाते हों, मासूम चेहरा पसीने में तर–ब–तर हो जाता हो, लेकिन इस श्रम की बदौलत सड़कें बनती हैं । भूखे बच्चों के मुँह में अन्न के दाने जाते हैं, गृहस्थी के अधबुने सपने साकार होते हैं, जीवन में वसंत आता है । जर्जर कश्ती के प्रथम तेवरी विशेषांक में प्रकाशित सुकवि मधुर नज़्मी की 'तेवरी' पाठकों को मानव जाति के श्रम और संघर्ष के दर्शन कुछ इस प्रकार कराती है–

"सुर्ख हाथों की हरारत में समायी है ग़ज़ल
एक मुफलिस के पसीने की कमायी है ग़ज़ल"

यहाँ यदि हम ग़ज़ल को मानवजाति के सुखात्मक मूल्यों के प्रतीक के रूप में लें तो आज समूची मानवजाति सामाजिक–आर्थिक एवं राजनीतिक शक्तियों के विषैले और शोषक परिवेश के बीच अपने अथक श्रम और संघर्ष के बल पर जिन्दा रहने का प्रयास कर रही है । यह जिन्दा रहने की जिजीविषा उसे भोग–विलास के बजाय उन संगीन लड़ाइयों की ओर ले जा रही है, जहाँ उसे न्यायकर्ताओं से न्याय की माँग बलपूर्वक रखने, कातिलों से बचने और वर्तमान समय के कुचक्र से उबरने के लिए अपने आक्रोश, विरोध और विद्रोह के तेवर दिखाना लाजिमी है–

मुंसिफे वक्त से, कातिल से, दौरे हाजिर से
इक कलमकार की संगीन लड़ाई है गजल

तेवरीपक्ष-16 पृ०2

Scanned by CamScanner

ग़ज़ल को मानवजाति के सुखात्मक मूल्यों का प्रतीक मानकर कही गयी श्री मधुर नज़्मी की इस तेवरी की सौन्दर्यात्मकता इन तथ्यों के कारण सात्विक रूप में उजागर होती है कि इसमें लोकरक्षा का वह मंगलतत्व अन्तर्निहित है, जिसका रसास्वादन इस बात की जानकारी देता है कि गाँव क़ी भोली और निस्छल ज़िन्दगी को सियासत के उन अलावों के इर्द–गिर्द इकट्टा कर दिया है, जहाँ के अलावों से उठता हुआ धुआं दमघोंटू माहौल बनाये हुए है और इस दमघोंटू माहौल से निजात या मुक्ति पाना आज बेहद जरूरी हो गया है–

अब अलावों से सियासत के धुंए उठते हैं
गाँव के गिरवीं परिन्दों की रिहाई है ग़ज़ल

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की मान्यता है कि "कविता केवल वस्तुओं के ही रंग रूप में सौन्दर्य की छटा नहीं दिखाती प्रस्तुत कर्म और मनोवृत्ति के भी अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है । जिन मनोवृत्तियों का अधिकतर बुरा रूप हम संसार में देखा करते हैं, उनका भी सुन्दर रूप कविता ढूँढ़कर दिखाती है । दशवदन–निधनकारी राम के क्रोध के सौन्दर्य पर कौन मोहित न होगा ?" अगर हम आचार्य शुक्ल की सौन्दर्य के प्रति व्यक्त की गयी उक्त मान्यता का सूक्ष्म विवेचन करें तो जिन मनोवृत्तियों का अधिकतर बुरा रूप हम संसार में देखा करते हैं, उन मनोवृत्तियों के सुन्दर रूप का कविता में दर्शन कविता की उस वैचारिक–प्रक्रिया के अन्तर्गत किया जा सकता है, जिसके तहत कविता बुरी मनोवृत्तियों का विभिन्न प्रकार से विरोध करती है । कविता का यह विरोध–प्रदर्शन ही वह सौन्दर्यात्मकता होती है, जो पाठकों के आत्म (रागात्मक चेतना) को सुरक्षा एवं तोष प्रदान करती है ।

श्री मधुर नज़्मी की उल्लेखित तेवरी के संदर्भ में हम इस प्रकार के दर्शन उस वैचारिक प्रक्रिया के अन्तर्गत कर सकते हैं जो कि मानवज़ाति के प्रति करुणा से सर्वप्रथम तो पाठक को सिक्त करती है तत्पश्चात् करुणा की गति मानव रक्षा के लिए शोषक आताताई वर्ग के प्रति विरोध में उर्जस्व हो जाती है और इस प्रकार से पाठक को प्राप्त वैचारिक ऊर्जा, उसे इस बात का बोध करा देती है कि थोथे वसंत, थोथी खुशहाली का नाटक रचनेवालों ने दर्द भूख

तबाही और कुहराम को आम जनता के बीच किस करीने के साथ सजा दिया है कि मुल्क में छायी हर प्रकार की सूरते–बद, सूरते–बहार नजर आ रही है । यथार्थ का यह बोध या ज्ञान ही पाठकों को उस सत्य और शिव तत्व के समन्वय की ओर ले जाता है, जिसका रसपरिपाक वसंत का नाटक रचनेवालों के विरोध में देखा जा सकता है–

"दर्द से, भूख से, कुहराम से, तबाही से,
मुल्क ने कितने करीने से सजाई है ग़ज़ल"

वस्तुतः सौन्दर्य की अनुभूति कविता के उस कर्म क्षेत्र के अन्तर्गत ही हो सकती है जिसमें लोक या मानवजाति की रक्षा का विचार अन्तर्निहित है। वस्तुओं का कोरा रूप सौन्दर्य क्षण–भर को चकाचौंध से भर सकता है, लेकिन यदि उनमें वास्तविक सौन्दर्य (सत्य और शिव तत्व के समन्वय की गुणवत्ता) का यदि अभाव है तो वह स्थायित्व ग्रहण नहीं कर सकता । जहाँ माहौल झुलसे हुए हों झोंपड़ियों से भूख के कारण किलकारियों की जगह बच्चों का क्रन्दन सुनायी दे रहा हो, महलों में रहने वाले अपनी सुख–सुविधा के लिए आम जनता का खून चूस रहे हों, ऐसे माहौल में कविता सौन्दर्य की वास्तविक प्रतीति तभी करा सकती है, जबकि उसमें इस प्रकार की विषमताओं के विरुद्ध संघर्ष करने, जूझने और मंगलकारी व्यवस्था की स्थापना करने की ऊर्जा अन्तर्निहित हो और इस प्रकार की ऊर्जा दलित वर्ग के प्रति दया और करुणा का भाव रखे बिना किसी प्रकार सम्भव नहीं । इस संदर्भ में श्री मधुर नज्मी की तेवरी का तेवरीपन सिर्फ इसी जन सापेक्ष मूल्यवत्ता में है कि–

"मैंने महलों से नहीं, झोंपड़ी की किस्मत से,
झुलसे माहौल के मंजर से उटायी है ग़ज़ल"

✪

–रमेशराज

तेवरीपक्ष-16 पृ० 5

Scanned by CamScanner

एक अपील–लेखकों, पाठकों से

आदरणीय महोदय ।

सन् १६६० से पूँजीवादी व्यवस्था के अजगर जिस प्रकार आम जनता के सुख–चैन को तेजी के साथ निगलते जा रहे हैं , कुव्यवस्था का शिकार किसी न किसी स्तर पर साहित्यकार भी हो रहा है । लघु–पत्रिकाओं के प्रकाशन में आयी गिरावट इसका ज्वलंत प्रमाण है । असत्य से जूझता साहित्यकार किस प्रकार सनातन और सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करे । यह एक अहम सवाल है ? दूसरी तरफ साहित्य और नैतिकता के विनाश के लिए यह घिनौनी व्यवस्था, अखबारों, आकाशवाणी, दूरदर्शन या बाजारू पत्र–पत्रिकाओं का अपने पक्ष और निरीह जनता के विरोध में एक पैने औजार की तरह इस्तेमाल करने लगी है । ऐसे में लघुपत्रिकाओं की भूमिका घटाटोप अँधेरे के बीच भले ही मात्र एक दीप के प्रकाशवान होने की घटना मात्र हो, लेकिन यह भूमिका सत् है ।

तेवरी पक्ष अनाचार और अन्याय से लड़ाई लड़ते–लड़ते सन् १६६० में निष्प्राण हो गयी । तेवरीपक्ष में पुनः प्राण फूँकने की कोशिशें, इस दौरान कई बार की गयीं । इस बीच तेवरीपक्ष के संरक्षक लोककवि रामचरन गुप्त भी परमतत्व में विलीन हो गये । पिताश्री का सदा–सदा के लिए हमसे विदा ले लेना भी तेवरीपक्ष पर बज्राघात साबित हुआ ।

पिताश्री द्वारा प्रज्जवलित तेवरीपक्ष जैसे नन्हे दीप को पुनः प्रज्जवलित करने का प्रयास या दुस्साहस भले ही इस स्वार्थी संसार में कोई अर्थ रखे न रखे, लेकिन यह दीप अब न बुझे, इसे बचाने में आप अपना सनातन सहयोग इस प्रकार दे सकते हैं–

१. आजीवन सदस्यता–मात्र ३००/– **२. संरक्षक–मात्र ५००/–**
३. वार्षिक सदस्यता–मात्र २०/–

विशेष– संरक्षक और आजीवन सदस्यों के नाम व पते 'पत्रिका परिवार' के रूप में आजीवन प्रकाशित किये जायेंगे । नवोदित रचनाकार यदि आजीवन सदस्यता ग्रहण करते हैं तो उनकी रचनाओं को पत्रिका में प्राथमिकता दी जायेगी ।

पत्रिका के प्रकाशन के साथ–साथ विभिन्न साहित्यिक विधाओं पर सहयोगी आधार पर पुस्तकें प्रकाशित करने की भी हम योजना बनाने जा रहे हैं, जिसका ब्यौरा विधिवत् रूप से 'पत्रिका परिवार' को समय–समय पर दिया जाता रहेगा ।

–रमेशराज

Scanned by CamScanner

लोक कवियों में एक अमर स्वर
'लोककवि रामचरन गुप्त'

—अशोक द्विवेदी

हमारे देश में हजारों ऐसे लोक कवि, जो सच्चे अर्थों में जनता की भावनाओं का प्रतिनिधित्त्व करते हैं, न केवल स्वयं, बल्कि अपनी रचनाओं के साथ गुमनामी के अँधेरे में गुम हो जाते हैं । आभिजात्यवर्गीय–साहित्य उनकी रचनाओं को और उनको महत्त्व देने में संभवतः इसी कारण डरता है कि कहीं ऐसे कवियों की रचनाधर्मिता के आगे उनके भव्य शब्द–विधान कहीं फीके न पड़ जाएँ । हिन्दी क्षेत्र के ही इन्हीं हजारों कवियों में से एक नाम स्व० रामचरन गुप्त का रहा है ।

पाठ्य–पुस्तिकीय साहित्य से अलग कवि गुप्त की कविता में एक सच्चे देश–प्रेमी, एक सच्चे लोकमन की छटा देखी जा सकती है ।

कवि अधिक पढ़ा–लिखा नहीं है । पोथियों से उसका सरोकार केवल जीवन के प्रश्नों को समझने और सुलझाने के क्रम में रहा है । उसके गीत शब्द–शास्त्रीय स्वरूप ग्रहण नहीं कर सके हैं । अलंकार और छंद विध ान को कविता की कसौटी मानने वालों को उनकी कविताएं पढ़कर तुष्टि भले ही न मिले, किन्तु अपने देश, देश पर मर मिटने वाले वीर जवानों और अपने ईश्वर के प्रति उनके अनुराग में कोई खोट निकाल पाना संभवतः उनके लिए भी दुष्कर होगा ।

स्व० रामचरन गुप्त का जीवन हमारे देश के उस समय का साक्षी रहा है, जिसने अंग्रेजों की गुलामी और स्वतंत्रता के पश्चात् देशी सामंतों–साहूकारों की गुलामी दोनों को झेला है । अंग्रेजों की गुलामी को झेलते हुए कवि ने अपने जीवन के सुनहरे क्षणों–युवावस्था को गरीबी और अभावों से काटा । कवि के जीवन में ऐसा भी समय आया जब एक दिन की मजदूरी न करने का मतलब घर में एक दिन का फाका था । कवि ने अपने इन दिनों को ईश्वर की उस प्रार्थना में उतारा जो केवल कवि की प्रार्थना नहीं बल्कि दुख–दर्द से पीड़ित उस युग की प्रार्थना थी

जब हर एक लोक मन यही पुकारता था–

"नैया कर देउ पार हमारी"

★ ★ ★ ★

विलख रहे पुरवासी ऐसे–
चौखन दूध मात सुरभी कौ
विलखत बछरा भोर "

'देश भक्ति में दीवाना' रामचरन सीमा पार दुश्मनों को कभी तलवार बनकर, कभी यमदूत बनकर, तो कभी भारी चट्टान बनकर चुनौती देता है । गोरों को भगाने के लिए, आजादी को बुलाने के लिए वह शमशीर खींचकर खून की होली खेलने के लिए जनता का आव्हान करता है–

"तुम जगौ हिंद के वीर समय आजादी कौ आयौ
होली खूं से खेलौ भइया
बनि क्रान्ती इतिहास रचइया
बदलौ भारत की तकदीर समय आजादी कौ आयौ... ....

गोरे देश को लूटते हैं, तो कवि कहता है–"सावन मांगै खूँ अंग्रेज कौ जी" । आजादी के बाद जब देशीपूँजीपति, राजनेता बदनाम होते हैं, तो कवि उनकी अमेरिकी सांठ–गांठ की भर्त्सना करता है । जब मंहगाई आती है तो कवि को एक–एक रोटी को तरसती जनता अभी भी परतंत्र नजर आती है । कवि भूख को समझता है, इसलिए भूखों की आवाज बनकर अपने गीतों में प्रस्तुत होता है । ये गीत न केवल भाव प्रवण हैं बल्कि उस मानवीय चिन्ता को भी प्रकट करते हैं जो इस युग की सबसे बड़ी चिन्ता है ।

आम जनता का जीवन जीने वाले स्व० रामचरन गुप्त अपने जीवन संघर्षों, लोकगीतों की मिठास से युक्त भजनों और देशभक्ति पूर्ण कविताओं के चलते निश्चित ही एक सफल लोक कवि कहे जाने के पात्र हैं । ब्रजभाषा की लोककवियों तथा लोकगायकों की परम्परा में वे अमिट रहेंगे, ऐसा विश्वास है ।

६६, बैंक कालोनी, प्रीमियर नगर, अलीगढ़

Scanned by CamScanner

नवगीत—

—यादराम शर्मा

पल रहे वे
आस्तीनों में
पसारे पांव,
ले दिलों में
राजनैतिक दाँव।

है खिलौना
दूसरों की जिंदगी
दूर/काफी दूर
है शर्मिन्दगी,

चल रहे हैं
साथ में ले
स्वार्थ तरु की छांव।

प्यार के परिधान में
हैवानियत
कौन जाने
है कहाँ इन्सानियत ?

ओट में जिनकी
हुए सब
पत्थरों के गाँव!

पैंठ बाजार, नयी कालोनी
कासिमपुर (पा.हा.)
अलीगढ़

—अशोक अंजुम

प्रश्न कर रहे पीड़ित
उत्तर मौन पड़े अकुलाएं
फिर हम कैसे गीत सुनाएं ?

शब्द खड़े हैं विवश
रंग फीके मुख के
बीतेंगे ना जाने कब
ये दिन दुख के ?

सोच – सोच कर थकते
क्योंकर चुभतीं आज हवाएं ?
फिर हम कैसे गीत सुनाएं ?

इक – इक सच पर
झूठ कई तनते देखे
खेमे नये–नये–
निशि–दिन बनते देखे–

देख रहे हम आए –दिन सब
रक्तिम होती हुई दिशाएं
फिर हम कैसे गीत सुनाएं ?

संवेदना, एफ–२३,
नई कालोनी, कासिमपुर (पा.हा.)
अलीगढ़ (उ०प्र०)

दोहे

डॉ० गोपाल बाबू शर्मा

धनिक न बाँचें किसी के, पीड़ा भरे निबंध,
उनके तो मन में बसे, हास-विलास सुगंध ।

बच्चे भूखे बिलखते, दूध पियें भगवान्,
अंधी श्रद्धा-भक्ति से, हार गया विज्ञान ।

पंथ न बोझिल हो कहीं, थकें न बढ़ते पाँव,
इसीलिये तो ठहरते, हम पीड़ा के गाँव ।

समय चीखकर कह रहा, तोड़ो अब जंजीर,
बिना हौसले के नहीं, बदलेगी तस्वीर ।

हमें जिन्होंने दुख दिये, उनके प्रति आभार,
तपकर दुख की आग में, हमको मिला निखार ।

पिता सभी कुछ छोड़कर, गुजरे गत सप्ताह,
पुत्र मगन 'मधु रात्रि' में, दिन में भरता आह ।

व्यर्थ आजकल हो गयी, अनुनय-विनय तमाम,
मगर जाम होते सफल, बन जाते सब काम ।

मत कोसो प्रारब्ध को, उसका रूख दो मोड़,
सूर्य साहसी निकलता, तम की कारा तोड़ ।

82, सर्वोदय नगर, सासनी गेट, अलीगढ़

Scanned by CamScanner

तेवरियाँ

गिरिमोहन गुरु

बादलों में एक चेहरा चाँद का,
सिन्धु को कारण बना उन्माद का ।

कुर्सियों ने देश जड़वत् कर दिया,
कुछ असर होता नहीं फरियाद का ।

देश के हालात फिर बदतर हुए,
खून ठण्डा क्यों भगत आजाद का ?

देखकर समवेत चिड़ियों का प्रयास,
पींजरा बनने लगा फौलाद का ।

देखनी तस्वीर हो यदि देश की,
देख लो चेहरा शबे–बरबाद का ।

(2)

स्वार्थ सरिता के किनारे है,
कह रहे फिर भी तुम्हारे हैं ।

सिर्फ दर्शन दे दिया करते,
दूरदर्शन के सितारे हैं ।

मंच के प्रपंच में डूबे,
आज भाषा और नारे हैं ।

डूबते मंझधार में अबतो,
सिर्फ तिनकों के सहारे हैं ।

दूसरों पर ध्यान क्या देंगे ?
ये स्वयं कुर्सी के मारे हैं ।

तेवरीपक्ष–16 पृ०10

Scanned by CamScanner

(3)

सब स्वाद के प्रेमी मिले, साधू नहीं मिला,
अवलम्ब जिसे कह सकें बाजू नहीं मिला ।

अफसर की गैरहाजिरी का यों हुआ असर,
टेबिल के सामने कोई बाबू नहीं मिला ।

चेहरे पर वही की वही मासूमियत मिली,
पर क्या हुआ कि आँख में जादू नहीं मिला ?

छोटे बड़े का तौल में जो भेद मिटाता
वह न्याय वाला कोई तराजू नहीं मिला ।

(4)

आज हर होंठ से हँसी गायब,
सुख के कमरे से रोशनी गायब ।

लोग मरघट के गीत गाते हैं,
ज़िन्दगी से हुई खुशी गायब ।

कौन चौपाल को सम्हालेगा ?
गाँव से खुद ही चौधरी गायब ।

चौकसी दे रहा नहीं कोई,
देश का सन्तरी कहीं गायब ।

कौन भटकों को पथ दिखायेगा ?
ढूँढ़कर लाइये नबी गायब ।

गोस्वामी सेवाश्रम
होशंगाबाद (म०प्र०)

Scanned by CamScanner

अजय 'साहिल'

बापू ! कैसी करामात है तेरा देश ?
बेईमानों की जमात है तेरा देश ।।

भ्रष्टाचार जमाखोरी, खूंरेजी, लूट ।
कैसा–कैसा अलामात है तेरा देश ।।

लंच, डिनर, उद्‌घाटन, भाषण नेता को ।
जनता को तो हवालात है तेरा देश ।।

लोकतंत्र को खतरा सीधे सादों से ।
गुण्डों की ऊँची बिसात है तेरा देश ।।

क्या होगा भविष्य, कहता है वर्तमान ?
कैसा जलता सवालात है तेरा देश ।।

विश्वासों की परम्परा इतिहास हुई ।
अब तो बस विश्वासघात है तेरा देश ।।

जनता भूखी मगर आँकड़े हैं चौकस ।
नेताओं की कमालात है-तेरा देश ।।

संसद में बहरे हैं, कलमों पर पहरे ।
बना हुआ सूखी दवात है तेरा देश ।।

बाहर से तो मिल बैठे दीखें 'साहिल' ।
अन्दर–अन्दर मगर घात है तेरा देश ।।

●

६२१, चौहट्टा कन्नौज--२०९७२५

Scanned by CamScanner

बलाल अहमद खाँ 'तनवीर'

बाँबी में हाथ डालना बन्द भी कर,
कीचड़ नाहक उछालना बन्द भी कर ।
तुझको ही इक रोज काटने दौड़ेंगे
अस्तीनों में साँप पालना बन्द भी कर ।
व्यर्थ निरर्थक कठिन परिश्रम करता है,
तेल रेत से अब निकालना बन्द भी कर ।
बन जाये ना एक रोज नासूर यही,
अब घावों पर नमक डालना बन्द भी कर ।
कौम का सच्चा रहबर तू बन सकता है,
सच्चाई में झूठ घालना बन्द भी कर ।

●

c/o डाकपाल पो० मवई जि० बाराबंकी–२२५४०६

तरल अलापुरी

निर्मोही से प्रीति जताना ठीक नहीं,
बुद्धिहीन को रीति बताना ठीक नहीं ।
अहकार में डूब चुका है जो मानव,
उस गर्वी को रीति सिखाना ठीक नहीं ।
पागलपन में भला–बुरा जो भूल गया,
ऐसे जन से प्रीति जताना ठीक नहीं ।
खून खराबों में तस्वीरें बिगड़ गयीं,
शासन–कर्ता–नीति सिखाना ठीक नहीं ।
शुद्ध सात्विक जीवन में जो भक्ति रंगे,
ऐसों को अमरीति सिखाना ठीक नहीं ।
जो सुख से सममाव घटाते हैं उनको,
जीवन का संगीत सुनाना ठीक नहीं ।

●

c/o आर० के पठान, भौदेही (म०प्र०)

दर्शन 'बेजार'

(1)

दुनिया के फसादात सियासत के दिए हैं,
हम जितने जिए हैं बड़ी मुश्किल से जिए हैं ।।

बाजार में बारूद की दुकानें लगी हैं,
बस बम के चरचे तो किताबों के लिए हैं ।।

होठों पे हँसी भूल के भी लाए नहीं हम,
हाकिम ने ये एहकाम यहाँ जारी किए हैं ।।

अपनों से मिली दर्द की सौगात में हमने,
हर वक्त यही घूँट में हँस–हँस के पिए हैं ।।

'बेजार' जमाने को दिखा भी न सके हम,
वो जख्म जो हमने बड़ी मुश्किल से सिए हैं ।।

(2)

जलते हुए चिराग अँधेरे में खो गए,
रहबर ही मेरे मुझसे बहुत दूर हो गए ।।

कोई भी मुझको राह दिखाने नहीं बचा,
कुछ देर साथ चलके सितारे भी सो गए ।।

कुछ इस तरह से मुझको दिया वक्त ने सिला,
वो फिर न आए पास पलट कर के जो गए ।।

तूफाँ से आज कोई शिकायत भी है फजूल,
खुद नाखुदा ही मेरा सफीना डुबो गए ।।

'बेजार' आरजू थी, मिलेगी कभी खुशी,
पर क्या करें कि अश्क ही दामन भिगो गए ?

Scanned by CamScanner

(3)

सफर जिन्दगी के सिर्फ रातों की सियाही है ।
यहाँ तो अब चिरागों के भी जलने पर मनाही है ।।

सितारे भी किसी दहशत में अब डूबे हुए हैं सब ।
वहाँ हर शख्स अब सहमा हुआ मायूस राही है ।।

उठाए फिर रहे हैं वो किसी शैतान का खंजर ।
मंजर के सामने अब तो तबाही ही तबाही है ।।

कहा है चोर हाकिम ने शरीफों को यहाँ 'बेजार' ।
वही है मीर जिसके पास भाड़े की गवाही है ।।

(4)

जुल्म का दौर है जज्बात बनाए रखिए ।
आग कैसी भी हो सीने में लगाए रखिए ।।

भीड़ जालिम है न मानेगी महज बातों से
आप भी हाथ में खंजर को उठाए रखिए ।।

हर तरफ लूट का माहौल बुलन्दी पर है
घर सियासत के लुटेरों से बचाए रखिए ।।

आज रहबर ही असल में है सफर के रहजन
नींद से खुद को व औरों को जगाए रखिए ।।

कहीं साया ही न कर डाले बगावत 'बेजार' ।
अपनी परछाई पे भी आँख लगाए रखिए ।।

18/4, पी० डब्ल्यू० डी० कालोनी
जेल रोड, लखनऊ

तेवरीपक्ष-16

पृ०15

Scanned by CamScanner

रमेश राज

सोच मत मैं दूर हूँ या तुझसे कटकर चल रहा
मैं हवा हूँ जिस्म से तेरे लिपटकर चल रहा ।
भोर की मैं लघुकथा, आलेख हूँ मैं धूप का
रात हूँ, पर रात से हर लम्हा घटकर चल रहा ।
बर्फ से माहौल में भी तेरे भीतर आग है
इसलिये मैं नाम तेरा अब भी रटकर चल रहा ।
फैल जाउँगा हवा में कल मैं खुशबू की तरह
वक्त की टहनी पे अब जितना सिमटकर चल रहा ।

15/109, ईशा नगर, अलीगढ़

ज्ञानेन्द्र साज

कण-कण में व्यापित हलचल है,
एक अजब -- सा कोलाहल है ।
घर - घर में बैठा है शंकर,
सबके होठों लगा गरल है ।
उसकी किस्मत भूखी - नंगी,
जिसके भी काँधों पे हल है ।
वादों का अवमूल्यन करती,
कुर्सी की बातों में छल है ।
ज्वार कभी भी बन सकता है,
जिसका चेहरा सौम्य सरल है ।
'साज' न छेड़ो राख की ढ़ेरी,
इसके नीचे दावानल है ।

संपादक - जर्जर कश्ती, अलीगढ़

Scanned by CamScanner

पुस्तक-परिचय

समर्पित है मन

—डॉ० राकेशगुप्त

डॉ० गोपाल बाबू शर्मा की नवीनतम काव्य-कृति 'समर्पित है मन' कभी व्यंग्य और कभी सूक्ति की शैली में जीवन की गहन अनुभूतियों का कोश है ।

लेखक ने इस संसार को, संसार के लोगों को बड़े निकट से देखा है तथा बड़ी सूक्ष्मता से परखा है । तभी तो उसने कहा है :
'जो तलवार से नहीं डरता, प्यार से झुक जाता है',
'जिन्दगी का सफ़र प्रियतम के बिना स्नेह-हीन दीपक जैसा है'
'धरती पर आने वाले को एक दिन जाना भी होगा'
'यदि आदमीयत नहीं है, तो धनवान् अथवा विद्वान होने से क्या हुआ ?'

देश की वर्तमान दशा पर उसका व्यंग्य कितना मार्मिक है:

"बात यदि हक की करेंगे,
झिड़कियाँ खाएँगे आप ।
हर तरफ शोषण खड़ा है,
बच कहाँ जाएँगे आप ?
मर गयीं संवेदनाएँ,
व्यवस्था बीमार है अब ,
चोर खुद राजा जहाँ हो,
न्याय क्या पाएँगे आप ?"

मेरा विश्वास है कि हिन्दी-जगत् मन को झकझोरने वाली इन कविताओं का मन से स्वागत करेगा ।

—३६८, सर्वोदय नगर, सासनी गेट
अलीगढ़—२०२००१ (उ०प्र०)

पुस्तक : समर्पित है मन (मुक्तक-संग्रह)
कवि : डॉ० गोपाल बाबू शर्मा
प्रकाशक : अरविन्द प्रकाशन, १४/५ द्वारकापुरी, अलीगढ़
पृष्ठ—६४ मूल्य—तीस रुपए

Scanned by CamScanner

हमारे प्रकाशन :–

नवें दशक में तेवरी विधा के चर्चित पाँच महत्वपूर्ण संग्रह

१ अभी जुबाँ कटी नहीं	सं०—रमेशराज	मू० पाँच रुपए
२ कबीर जिन्दा है	सं०—रमेशराज	मू० दस रुपए
३ इतिहास घायल है	सं०—रमेशराज	मू० पाँच रुपए
४ एक प्रहार लगातार	कवि—दर्शन बेजार	मू० पाँच रुपए
५ देश खण्डित हो न जाए	कवि—दर्शन बेजार	मू० दस रुपए

सम्पर्क

सार्थक सृजन प्रकाशन, ईसा नगर, अलीगढ

सेवा मे

श्री / सुश्री ____________________

____

____

____

पिन | | | | | |

सपादक / प्रकाशक / मुद्रक रमेशराज ने १५ / १०६, ईशा नगर, निकट थाना सासनी गेट, अलीगढ़ द्वारा शारदा प्रिंटर्स, सासनी गेट, अलीगढ के लिए कजली प्रिंटर्स द्वारा मुदित / प्रकाशित

लैजर टाइप सैटिंग-प्रत्यक्ष कम्प्यूटर्स जॉब, जयगंज, अलीगढ

Scanned by CamScanner